

अचूक प्रहार पुं. (तत्.) वह प्रहार जो अपने लक्ष्य पर लगने से न चूके, यानी अवश्य ही लगे, अमोघ।

अचेत वि. (तत्.) 1. चेतनारहित, बेसुध, बेहोश पुं. 1. जड़ प्रकृति, जड़त्व 2. माया, अज्ञान।

अचेतन वि. (तत्.) 1. अचेत, जिसमें चेतना का अभाव हो, जड़ 2. निर्जीव, जीवन रहित 3. मूर्च्छित, संज्ञाशून्य।

अचेता वि. (तत्.) 1. अचेत, चेतनारहित 2. जीवनरहित, निर्जीव, निष्प्राण।

अचेष्ट वि. (तत्.) 1. चेष्टा-रहित, बिना प्रयास का, गति-रहित 2. मूर्च्छित, बेहोश।

अचेष्टित वि. (तत्.) 1. जिस कार्य के लिए प्रयत्न न किया गया हो, चेष्टा न की गई हो 2. जो गति-रहित हो।

अचैतन्य वि. (तत्.) 1. चैतन्य या चेतना रहित, निश्चेतन, चेतना का अभाव 2. होश-हवास के बिना, पुं. 1. चेतना-विहीनता, बेहोशी 2. अज्ञान 3. जड़ पदार्थ।

अच् पुं. (तत्.) व्याकरण. 'अ' से 'औ' तक के स्वरों के लिए प्रयुक्त संस्कृत का पारिभाषिक शब्द।

अच्छत पुं. (देश.) अक्षत, बिना टूटा हुआ चावल (जो मंगल कार्यों में प्रयुक्त होता है) वि. बिना टूटा, टूट-फूट के बिना, अखंडित, लगातार।

अच्छर पुं. (तद्.) अक्षर, वर्ण, हरफ।

अच्छरा स्त्री. दे. अप्सरा।

अच्छा वि. (तद्.) 1. उत्तम, बढ़िया 2. भला 3. स्वस्थ, चंगा, नीरोग मुहा. अच्छा करना- उत्तम कार्य करना, स्वस्थ या नीरोग कर देना; अच्छा कहना- प्रशंसा करना; अच्छा रहना- सकुशल रहना; अच्छा लगना- रुचिकर होना क्रि.वि. अच्छी तरह, खूब, बहुत प्रयो. तुमने यह काम अच्छा किया अव्य. 1. स्वीकृति-सूचक शब्द.....अच्छा, मैं अवश्य आऊंगा 2. आश्चर्यसूचक.....अच्छा! ऐसा करेंगे?

अच्छाई स्त्री. (तद्.) 1. अच्छापन, सद्गुण, उत्तमता, श्रेष्ठता 2. भलाई उदा. आप तो जिसके विरुद्ध हो जाते हैं, उसमें फिर किसी अच्छाई को देख ही नहीं पाते।

अच्छा-खासा वि. (तद्.) 1. बहुत अच्छा, विल्कुल ठीक 2. स्वस्थ, तंदुरुस्त।

अच्छापन पुं. (तद्.) अच्छे होने का भाव, अच्छाई, उत्तमता।

अच्छा शील पुं. (तत्.) व्यक्ति का वह आचरण जिसमें कोई विधिविहित दोष न हो और जिसे प्रशंसनीय माना जा सके, सदाचरण।

अच्छा हक पुं. (तद्.+अर.) किसी वस्तु के स्वामित्व पर आधारित, रखने या बेचने का ऐसा वैध अधिकार जिसे कोई चुनौती न दे सके।

अच्छिन्न वि. (तत्.) 1. जो कटा न हो, अखंडित 2. पूरा, अविभक्त 3. लगातार चलनेवाला।

अच्छी ख्याति स्त्री. (तद्.+तत्) किसी व्यक्ति, व्यापारिक संस्था आदि के बारे में जन-साधारण में बनी हुई उत्तम धारणा।

अच्छी साख स्त्री. (तद्.+तत्) वाणि. किसी व्यक्ति, व्यापारिक संस्था आदि की विश्वसनीयता जिसके आधार पर उसे धन या पण्य उधार दे दिए जाते हैं।

अच्छेद्य वि. (तत्.) 1. जिसे काटा न जा सके 2. जिसका छेदन न किया जा सके

अच्युत वि. (तत्.) 1. जो गिरा न हो, जो अपने स्वरूप, स्थान, सामर्थ्य आदि से च्युत न हो 2. दृढ़, अटल, स्थिर 3. नित्य, अमर, अविनाशी 4. जो न चूके, जो त्रुटि न करे पुं. 1. विष्णु और उनके अवतारों के नाम 2. वासुदेव, कृष्ण।

अच्युतानंद वि. (तत्.) जिसका आनंद अस्थिर या अस्थायी न हो, अपितु नित्य हो पुं. आनंदमूल परमात्मा, ईश्वर।

अछवानी स्त्री. (तद्.) अजवाइन, सोंठ और मेवे को पीस कर घृत में पका कर बनाया हुआ पेय जो प्रसूता को पिलाया जाता है।